।। श्री गणेशाय नमः।।

सम्मान

आज मेरा मन उस नवयुवक के प्रति बहुत भावुक हो रहा है और गर्व भी हो रहा है। लंबी कद–काठी, ऊँचा मस्तक, गंभीर चेहरा, गर्वीली आवाज वाले उस युवक को हम आत्मा से प्रणाम करते हैं और आशीर्वाद भी देते हैं। हम जब भी भगवान जी से बात करते हैं उस व्यक्ति के लिए दो शब्द जरूर बोल देते हैं, कि हे प्रभु हम नहीं जानते कि उस नवयुवक को अब क्या चाहिए? पर आप तो जानते हो उनकी जो इच्छा हो उसे जरूर पूरा कीजिए। बड़ा ईमानदार, कर्मठ, बुद्धिमान, हर वक्त जोशीला, बड़ों का आदर–सत्कार करना नहीं भूलते, अमीर–गरीब, ऊँच–नीच कोई पाखंड नहीं। उस युवक के ऊपर राष्ट्रप्रेम जो भरा है। जिसके रोम–रोम में पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न समाये हो। उन्होंने माननीय पूर्व प्रधानमंत्री अटल जी को पढ़ा ही नहीं, गढ़ा भी है। उनकी हर बात अटलजी से शुरू होती है, और समाप्त भी अटल जी पर ही होती है। अटल जी क्या खाते थे, क्या पहनते थे और उन्हें क्या–क्या पसंद था? उसे हर एक बात मालूम है। वह अकेला नहीं है उसके साथ उसकी अपनी स्वयं की शक्ति है। अपने हर कार्य से संतुष्ट, देशभक्ति कूट–कूट कर भरी हुई है। हर बात शुद्ध हिंदी में करना हाय, हेलो से दूर रहना, अपने सनातन धर्म की अलख जगाने वाला, सोए हुए सनातन को जगाने का, अपनी मातृभाषा हिंदी को जन–जन तक पहुँचाने वाला युवक कोई और नहीं। आप सभी उनसे मिल चुके हैं और जानते भी हैं उनसे मिलकर हमको भी ख्याल आया कि हम क्या दो शब्द उनके सम्मान में लिख सकते हैं, नहीं लिख पाए हम। वह जिन शब्दों के अधिकारी हैं वह मेरे पास शब्द नहीं है। पूर्व प्रधानमंत्री अटल जी का देश प्रेम अपनी मातृभाषा हिंदी से प्रेम जग जाहिर है, पर जिस व्यक्ति में वह समाया हुआ, जिसमें समूचा राष्ट्र समाया हुआ वह कोई और नहीं हमारे (संपादक जी) श्री शिव प्रताप मिश्रा जी

इनकी पत्रिका पढ़कर हमारे मन में लिखने का विचार आया। इनकी जितनी भी मैंने पत्रिका पढ़ी उसमें हर रंग मिले ऐसा लग रहा था जैसे अमृत की वर्षा हुई। राष्ट्रप्रेम में गोता लगाने वाली पत्रिका (ऐतिहासिक कदम) में सब कुछ है। कभी हरियाली तीज में महिला मंडल धमाल मचाती, तो कभी हरियाली गुरु सर्पों के साथ खेलते हुए, कभी ईश्वरी भक्ति से लेकर कभी (राहुल गाँधी) यात्रा पर चर्चा, कभी बजट पर मुद्दा उठाने वाले संपादक जी का कहना है कि आम बजट नए भारत का निर्माण है और यह संकल्प हमारे देश को मजबूत दृढ़ निश्चय करेगा। हम देखते हैं हमारे आसपास के तमाम युवा रोजगार नहीं कोई काम नहीं का नारा लगाते रहते है। उठो, जागो और जगाओ राष्ट्र से प्रेम करो अपनी भाषा हिंदी से प्रेम करो। अगर यह भी नहीं कर सकते तो उठा लो कागज और कलम लिख दो उस युवा के नाम पत्र जिसने हिंदी के प्रति अलख जगाई है। रात–रात भर जाग कर अपनी पहचान बनाई है। हम सबके मन में हिंदी घर–घर हिंदी पहुंचाई है। बहुत हो गया है हाय, बाय हम सीधे दोनों हाथ (प्रणाम) जुड़ाए हैं। (श्री संपादक जी) का उन सभी नवयुवकों को संदेश देते हुए कह रहे हैं ज्यादा कुछ नहीं करना है बस अपना राष्ट्र अपनी भाषा हिंदी से प्रेम करो, कह रहे हैं। हिंदू है हम, सब को हिंदी आना चाहिए।

चाहे रहो बसो कहीं तुम, रोम–रोम में हिंदू होना चाहिए।

धरो शीश किसी भी चौखट पर, ह्रदय में राम नाम होना चाहिए।

कोट पैंट पहनो या जींस चीथड़ी सी, पर गमछा भगवा होना चाहिए।

मैगी पिज्जा बर्गर खाओ, चाहे खाओ रोटी साग।

पर याद रहे प्रसाद में तुलसी का पत्ता होना चाहिए।

उड़े पतंग सतरंगी, चाहे उड़े कबूतर झुन्ड।

पर भारत का तिरंगा ऊंचा होना चाहिए।

चाहे रोज मनाओ वैलेंटाइन–डे या डेट पर डेट डे।

पर घर आंगन में पत्नी होना चाहिए।

नहीं बसर गद्दारों की, नहीं नक्सलियों की।

जो शीश कटे रणभूमि में ऐसा मस्तक चाहिए।

गीत गाओ नृत्य करो होटल बार में।

पर जुबान में सबकी वंदे मातरम होना चाहिए।

हम हिंदू हैं सबको हिंदी आनी चाहिए। वंदे मातरम जय हिंद, प्रणाम। संपादक जी को हमारी ओर से छोटी सी भेंट।

विश्वनाथ मम नाथ पुरारी। महिमा विदित ना जाए तुम्हारी।।

मोर मनोरथ जानहु नीके। बसु सदा उन पर सब ही के।।

हमारे हाथों से लिखने में जो त्रुटियां हुई हो उन पर आप गौर ना करके हमारे भाव को समझने का प्रयास करें। हमने यहाँ पर एक पत्नी की जो बात कही है वह इसलिए कि हमारे प्रभु श्री राम ने एक पत्नी व्रत का संकल्प लिया था, वह भी त्रेता युग में। द्वापर युग में यह संकल्प नहीं था। हमारे शिव जी भी एक पत्नी व्रती थे। हमारे सनातन धर्म की यही विशेषता है, यही अखण्ड भारत की पहचान है। हम सब एक हैं एक रहेंगे। सबका साथ, सबका विकास हो। ऐतिहासिक कदम को निरंतर संघर्षरत रहने वाले श्री शिव प्रताप मिश्र जी को आप सभी पाठकगण शुभकामनाएं देकर उत्साहित करें। उनका मनोबल बढ़ाएं। अभी हाल ही में आदरणीय श्री ललित कान्त पांडेय जी, राष्ट्रीय संयोजक जी के द्वारा सम्मानित हुए, अभिभूत हुए। वैसे संपादक हर जगह सम्मान के अधिकारी हैं और धीरे–धीरे सफलता की ओर बढ़ते (ऐतिहासिक कदम) हमेशा बढ़ते रहें। श्री

ललित कान्त पाण्डेय जी को बहुत–बहुत धन्यवाद जो श्री शिव प्रताप मिश्रा जी को राष्ट्र के प्रति समपर्ण को जाना और समझा। बचपन की एक कविता याद आई है। जो हमारी पुस्तक में थी। मैं यहां दो लाईन लिखने का प्रयास कर रही हूँ। जो हमारी ओर से शिव को समर्पित है।

वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो।

सामने पहाड़ हो, सिंह की दहाड़ हो।

कदम कभी रूके नहीं।

इस शुभकामना के साथ सबका प्रेम आपको मिलता रहे। (शिव शक्ति) की असीम कृपा बनी रहे। सादर सप्रेम भेट स्वीकार हो।

विगत कई वर्षों से मातृभाषा हिन्दी को उसका सम्मान दिलाने के लिये लोगों में जागरूकता फैलाने का काम करने वाले इस महा आन्दोलन के मुख्य संरक्षक आदरणीय वेद प्रताप वैदिक जी हैं जो हिन्दी पत्रकारिता के स्तम्भ होने के साथ अंतर्राष्ट्रीय पत्रकार व विचार तथा चिन्तक हैं।

भारत माता की जय, वन्दे मातरम्।

दुर्गेश तिवारी